- कालिदासादि महाकवियों की रचनाओं से परिचित होंगे।
- कालिदासादि महाकवियों की शैलीगत विशिष्टताओं के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- संस्कृत साहित्य के कुछ अन्य महाकवियों जैसे भट्टि, कुमारदास, रत्नाकर के विषय में जान सकेंगे तथा उनकी रचनाओं से परिचित होंगे।

3.1 प्रस्तावना

इस खण्ड की प्रथम एवं द्वितीय इकाई में आपने महाकाव्य, खण्डकाव्य (गीतिकाव्य) और मुक्तककाव्य की उत्पत्ति तथा विकास के विषय में जानकारी प्राप्त की है। इस इकाई में संस्कृत साहित्य के प्रमुख महाकवियों के विषय में चर्चा की जायेगी। **"सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः .... ।।"** साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ के लक्षण का अनुसरण कर कालिदास, अश्वघोष, भारवि, माघ आदि महाकवियों ने अपने ग्रन्थों का प्रणयन किया तथा संस्कृत साहित्य में दीपशिखा कालिदास, आतपत्र भारवि, घण्टामाघ जैसी उपाधियों से स्वयं को अलंकृत किया। इस इकाई में आप इन्हीं महाकवियों के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व और शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन करेंगे।

3.2 कालिदास

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के श्रेष्ठ कवि एवं नाटककार हैं। यहाँ आप उनके जीवन-वृत्त, कर्तृत्व तथा शैलीगत वैशिष्ट्य के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करेंगे।

3.2.1 जीवन-वृत्त

महाकवि कालिदास के जीवन-वृत्त के विषय में कोई प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध नहीं है। कालिदास ने अपने ग्रन्थों में बाण के समान अपने जीवन-वृत्त के विषय में कोई जानकारी नहीं दी है। उनके विषय में कुछ किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं जिनके आधार पर उनके जीवन-वृत्त पर कुछ प्रकाश पड़ता है। इन किंवदन्तियों में महाकवि कालिदास का विक्रमादित्य की सभा में नवरत्नों में स्थान, विदुषी विद्योत्तमा के साथ विवाह तदन्तर ज्ञानप्राप्ति, भोजराज की राजसभा में मुख्य स्थान की प्राप्ति आदि प्रसिद्ध हैं। कालिदास के ग्रन्थों के अध्ययन के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि वे जन्मना ब्राह्मण और शिवभक्त थे। शिवभक्ति के साथ-साथ अन्य देवों के प्रति भी उनका आदरभाव था। रघुवंश और मेघदूत में उन्होंने जिस प्रकार से भौगोलिक परिवेश का वर्णन किया है उससे यह ज्ञात होता है कि उन्होंने भारतवर्ष की विस्तृत यात्रा की थी। उनके ग्रन्थों में धनहीनता एवं दारिद्र का अभाव है। अतः यह कहा जा सकता है कि उनका भौतिक जीवन सुखमय था तथा उन्हें आर्थिक कष्ट नहीं था।

महाकवि कालिदास के जन्मस्थान के विषय में भी विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। विभिन्न विद्वानों ने कालिदास को काशी, बंगाल, विदर्भ, विदिशा, अयोध्या, मिथिला, कश्मीर, गढ़वाल तथा उज्जयिनी का निवासी स्वीकार किया है। महाकवि ने मेघदूत में उज्जयिनी के प्रति जिस प्रकार का आदरभाव प्रदर्शित किया है उससे यह ज्ञात होता है कि महाकवि कालिदास उज्जयिनी के निवासी थे अथवा उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय उज्जयिनी में व्यतीत किया था।

महाकवि कालिदास के काल-निर्धारण के विषय में भी प्रामाणिक सामग्री का नितान्त अभाव है उनके काल-निर्धारण के विषय में जो मत प्रस्तुत किये गये हैं वे अनुमान पर आधारित

हैं। कुछ विद्वान् कालिदास का काल छठीं शताब्दी ई॰, कुछ चतुर्थ शताब्दी ई॰ और कुछ प्रथम शताब्दी ई॰पू॰ निर्धारित करते हैं तथा इस विषय में अपना-अपना प्रमाण भी प्रस्तुत करते हैं। किन्तु उपरोक्त तिथियों में कालिदास को प्रथम शताब्दी ई॰पू॰ का माना जाना नितान्त सटीक लगता है। इस पक्ष में विद्वानों ने अनेक मत प्रस्तुत किये हैं जैसे –

– कालिदास विक्रम संवत् के प्रवर्तक विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक थे, जिनका समय प्रथम शताब्दी ई॰पू॰ था।

– कालिदास के ग्रन्थों में अपाणिनीय प्रयोगों का बाहुल्य है, अतः कालिदास का काल रामायण, महाभारत की रचना काल के समीप सिद्ध होता है।

– महाकवि अश्वघोष (78 ई॰ के लगभग) पर कालिदास का स्पष्ट प्रभाव पड़ा है जो यह सिद्ध करता है कि कालिदास प्रथम शताब्दी ई॰पू॰ के थे।

– मालविकाग्निमित्र में शुंगवंशी राजा पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र को नायक बनाना, ऐतिहासिक ग्रन्थों में अप्राप्त अग्निमित्र विषयक तथ्यों का उल्लेख यह सिद्ध करता है कि कालिदास का काल अग्निमित्र के निकट अर्थात् प्रथम शताब्दी ई॰पू॰ था।

3.2.2 कर्तृत्व

महाकवि कालिदास की सात कृतियाँ प्रसिद्ध हैं जिनमें रघुवंश और कुमारसम्भव महाकाव्य, ऋतुसंहार और मेघदूत गीतिकाव्य तथा अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र नाटक हैं। इनमें रघुवंश, कुमारसम्भव तथा मेघदूत लघुत्रयी में परिगणित हैं। कालिदास विरचित महाकाव्यों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

कुमारसम्भव–

यह महाकाव्य कालिदास की प्रारम्भिक रचना है। इसमें 17 सर्ग हैं जिनमें प्रथम आठ सर्गों को ही कालिदास रचित माना गया है, शेष सर्ग कथापूर्ति के लिये परवर्ती कवि के द्वारा लिखे गये हैं। इस तथ्य के पीछे भाव, भाषा, शैली, व्याकरण और छन्द सम्बन्धी दोष कारण माने गये हैं। मल्लिनाथ ने आठ सर्गों पर ही अपनी टीका लिखी है, जिसमें अष्टम सर्ग की टीका दोषपूर्ण है। अतः अष्टम सर्ग की टीका मल्लिनाथ की नहीं मानी जाती है। लघुत्रयी में परिगणित इस महाकाव्य के 17 सर्गों में कालिदास ने हिमालय-वर्णन, हिमालय-मैना विवाह, पार्वती-जन्म, शिव-पार्वती विवाह की नारद द्वारा चर्चा, ताड़कासुर से पीड़ित देवों का ब्रह्मा के पास जाना, स्कन्द द्वारा ताड़कासुर के वध का उपाय ब्रह्मा द्वारा बताया जाना, शिव की तपस्या भंग करना, रति-विलाप, पार्वती द्वारा घोर तप करना, शिव की वरयात्रा, पार्वती-परिणय, दाम्पत्य जीवन, विहार, स्कन्द (कुमार) जन्म, कुमार का सेनापति बनना, ताड़कासुर वध आदि की कथा वर्णित है।

रघुवंश–

महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्य में 19 सर्ग हैं जिनमें सूर्यवंशी 31 राजाओं के जीवन का वर्णन है। इस महाकाव्य में कालिदास ने रघुवंशी राजाओं के गुणों, राजा दिलीप का सपत्नीक वसिष्ठ-आश्रम में जाना, नन्दिनी की सेवा, सन्तानलाभ के लिये वरप्राप्ति, रघु-जन्म, अज-इन्दुमती विवाह, अज-विलाप, दशरथ का मृगया वर्णन, शाप-प्राप्ति, पुत्रेष्टियज्ञ, रामादि चारों पुत्रों का जन्म, सीता-स्वयंवर, रामादि का विवाह, राम-वनवास, सीता-हरण, रावण-वध, राम का राज्याभिषेक, सीता-परित्याग, कुश-लव का जन्म, कुश का राज्याभिषेक एवं विवाह, कुश का स्वर्गवास, कुश के पुत्र अतिथि का राज्याभिषेक, अतिथि तथा उसके वंशज 21 अन्य राजाओं का वर्णन, अग्निवर्ण की कामुकता, उसकी मृत्यु आदि का वर्णन

किया है। इनमें दिलीप, रघु, अज, दशरथ और राम के जीवन का विशद् वर्णन तथा शेष अन्य राजाओं के जीवन का संक्षिप्त वर्णन महाकवि द्वारा किया गया है। आप रघुवंश महाकाव्य की कथा का विस्तृत अध्ययन इकाई 5 में करेंगे।

3.2.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

महाकवि कालिदास की शैली में दुरूहता में सुबोधता, काव्य में नाटकीयता, नैसर्गिक सुषमा में सालंकारता, सरलता में सरसता, सहज भावाभिव्यक्ति में कल्पना की बहुलता और श्रृंगार में भी करुण रस की प्रतीति जैसे विरोधी गुणों का समन्वय मिलता है। भाषा-सौष्ठव भावों की मनोरम अभिव्यक्ति, अलंकार-योजना, प्रकृति के आन्तरिक एवं बाह्य रूप का चित्रण, रस-योजना आदि महाकवि कालिदास की शैलीगत विशिष्टतायें हैं।

कालिदास ललित भावों के कवि हैं। उन्होंने रघुवंश के अज-विलाप में दम्पति के सुन्दर सम्बन्धों और समन्वयात्मक सम्पर्क की अभिव्यक्ति का वर्णन किया है। अज के लिये इन्दुमती का वियोग उसका सर्वस्वहरण है। ऐसे दुर्लभ दाम्पत्य प्रेम का वर्णन कालिदास ने अपने काव्य में किया है–

गृहिणी सचिवः सखी मिथः प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ।
करुण विमुखेन मृत्युना हरता त्वां वद किं न मे ह्रतम्।।

(रघुवंश–8/67)

महाकवि कालिदास रससिद्ध कवि हैं। उनके काव्यों में श्रृंगार, हास्य, करुण, वीरादि रसों का सुन्दर समन्वय है। कालिदास श्रृंगार के सम्भोग तथा विप्रलम्भ दोनों पक्षों के प्रयोग में सिद्धहस्त थे। उन्होंने 'कुमारसम्भव' के अष्टम सर्ग में सम्भोग श्रृंगार का मनोरम चित्रण किया है–

चुम्बनेष्वधरदानवर्जितं खिन्नहस्तसद्योपगूहनम्।
क्लिष्टमन्मथमपि प्रियं प्रभोर्दुर्लभप्रतिकृतं वधूरतम्।।

(कुमारसम्भव–8/2)

महाकवि कालिदास ने 'कुमारसम्भव' के रति-विलाप एवं 'रघुवंश' के अज-विलाप में करुण रस को उसकी चरमावस्था तक पहुँचा दिया है। अज-विलाप के इस श्लोक में करुण रस की स्पष्ट झलक देखी जा सकती है–

धृतिरस्तमिता रतिश्च्युता विरतं गेयमृतुर्निरुत्सवः।
गतमाभरणप्रयोजनं परिशून्यं शयनीयमद्य मे।।

(रघुवंश–8/66)

महाकवि कालिदास ने उपमा, उत्प्रेक्षा, यमक, रूपक, श्लेष, अर्थान्तरन्यास, दीपक, दृष्टान्त, निदर्शना, व्यतिरेक, विभावना आदि अलंकारों का प्रयोग किया है। उपमा उनका प्रिय अलंकार है। उनकी उपमायें असाधारण और मनोरम हैं। वे दीपशिखा की उपमा मात्र से **'दीपशिखा कालिदास'** हो गये। रघुवंश के इन्दुमती स्वयंवर के वर्णन के प्रसंग में महाकवि ने इन्दुमती की उपमा संचारिणी दीपशिखा से दी है–

संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीताय पतिंवरा सा।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः ।।

(रघुवंश–6/67)

महाकवि ने अपने काव्य में छोटे और गेय छन्दों का बहुलता से प्रयोग किया है। उपजाति उनका प्रिय छन्द है जिसका प्रयोग रघुवंश और कुमारसम्भव के विभिन्न सर्गों में किया गया है। इसके अतिरिक्त अनुष्टुप्, वंशस्थ, रथोद्धता, वियोगिनी, द्रुतविलम्बित, मालिनी, मन्दाक्रान्ता, वसन्ततिलका, हरिणी आदि छन्दों का प्रयोग भी मिलता है।

बोध प्रश्न 1

1. निम्नलिखित में से कालिदास रचित महाकाव्य है–

   (अ) बुद्धचरित (ब) रघुवंश

   (स) शिशुपालवध (द) नैषधीयचरित

2. महाकवि कालिदास का प्रिय अलंकार है–

   (अ) रूपक (ब) उत्प्रेक्षा

   (स) श्लेष (द) उपमा

3. नीचे दिये गये कथनों में से सत्य (√) तथा असत्य (×) कथन का चयन कीजिये।

   i) रति-विलाप का प्रसंग कुमारसम्भव महाकाव्य में है– ( )

   ii) कालिदास का प्रिय छन्द मालिनी है– ( )

   iii) कालिदास का समय प्रथम शताब्दी ई॰ पू॰ माना जा सकता है– ( )

4. लघुत्रयी के अन्तर्गत कौन-कौन सी रचनायें हैं?

   ....

   ....

अभ्यास प्रश्न 1

1. कालिदास की कृतियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिये।

3.3 अश्वघोष

अश्वघोष महान् धर्मप्रचारक, दार्शनिक तथा उच्चकोटि के विद्वान् थे। यहाँ आप अश्वघोष के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व और शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन करेंगे।

3.3.1 जीवन-वृत्त

महाकवि अश्वघोष की रचनाओं से यह ज्ञात होता है कि वह साकेत अर्थात् अयोध्या के निवासी थे। उनकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था। ये बौद्ध भिक्षु तथा आचार्य थे जिन्हें भदन्त महाकवि तथा महावादी भी कहा जाता था। ये जन्मना ब्राह्मण थे बाद में बौद्ध धर्म में दीक्षित होकर उन्होंने सुदूर प्रदेशों की यात्रा की तथा बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार किया।

अश्वघोष का काल कुषाण शासक कनिष्क के समकालीन था। चीनी परम्परा में अश्वघोष को कनिष्क का आध्यात्मिक उपदेशक तथा चरक को उनका राजवैद्य कहा गया है। बुद्धचरित तथा सौन्दरानन्द में अश्वघोष ने शुद्धोदन के व्यक्तित्व तथा शासन-व्यवस्था के वर्णन में कनिष्क के व्यक्तित्व तथ शासन-व्यवस्था की झाँकी दी है। शारिपुत्रप्रकरण की पाण्डुलिपि से भी यह सिद्ध होता है कि अश्वघोष कनिष्क के समकालीन थे। भारतीय विद्वान् कनिष्क का समय प्रथम शताब्दी ई॰ पू॰ मानते हैं। अतः इस आधार पर अश्वघोष का काल भी प्रथम शताब्दी ई॰ पू॰ माना जा सकता है।